11 एक यात्रा यह भी



रामदरश मिश्र
(जन्म : सन् 1924)

रामदरश मिश्रजी हिन्दी साहित्य के प्रथम कोटि के साहित्यकार है। आपने कहानियाँ, काव्य एवं उपन्यास आदि क्षेत्रों में अपनी कलम चलाई है। आपके बहुचर्चित उपन्यास हैं- जल टूटता हुआ और 'पानी के प्राचीर'। आपकी कविताओं के संग्रह हैं- 'बैरंग-बेनाम चिट्ठियाँ', 'पक गई है धूप', 'जुलूस कहाँ जा रहा है?', 'आम के पत्ते'। आपके कहानी संग्रह हैं- 'खाली घर', 'बसंत का एक दिन', 'इकसठ कहानियाँ', तथा 'मेरी प्रिय कहानियाँ'। 'आम के पत्ते' काव्य संग्रह को व्यास सम्मान से सम्मानित किया गया है। आपका हिन्दी अकादमी के शिखर सम्मान एवं उत्तरप्रदेश हिन्दी संस्थान के भारतभारती पुरस्कार से प्रतिष्ठित किया गया है।

'एक यात्रा यह भी'- कहानी में रिक्शावाले से परिचित होने पर उसके जीवन की घटनाओं से नारी के प्रति उसका दृष्टिकोण देखकर तथा जीवन में उतारे गए कर्तव्यबोध से प्रेरणा प्राप्त होती है- स्त्रीसम्मान, स्त्री सुरक्षा एवं आत्मीयतापूर्ण संबंधों को खूबी से प्रस्तुत किया गया है जो अत्यंत प्रेरक है।

मैं बहुत यात्रा-भीरु हूँ। यात्रा पर निकलते समय डर बना होता है कि पता नहीं कैसे-कैसे लोगों से पाला पड़ेगा। सबसे बड़ी असहजता तो अनुभव होती है अंट-शंट किराया माँगनेवाले ऑटोवालों से। नए शहर में कैसे-कैसे लोग-मिलेंगे, यह चिंता भी बनी होती है।

तो इस बार एक डॉक्टर से मिलने के लिए ग्वालियर जाना पड़ गया। पत्नी साथ थी, इसलिए आश्वस्ति बनी हुई थी। स्टेशन पर उतरते ही ऑटोवाले पीछे पड़ गए। हम चुपचाप आगे बढ़ते रहे। एक नवयुवक ऑटोवाला साथ लग गया। हम कुछ बोले बिना आगे बढ़ते रहे कि उसकी आवाज आई, ''बाबूजी, आप आखिर कहीं जाएँगे ही और कोई ऑटो करेंगे ही, तो फिर मेरा ऑटो क्यों नहीं?'' उसकी जिद और आवाज में कुछ ऐसा आकर्षण महसूस हुआ कि मैंने स्वीकृति दे दी।

वह प्रेम-भरी बातें करता रहा और हमें डॉक्टर के यहाँ पहुँचा दिया। उसके द्वारा बताए वांछित पैसे देकर डॉक्टर के घर की कॉल-बेल बजाई। ज्ञात हुआ कि डॉक्टर ने क्लीनिक की जगह बदल दी है।

ऑटोवाला बिना हमारे कहे हमारा इंतजार कर रहा था। हमें नई जगह पर पहुँचा दिया। मैंने पूछा, ''कितने पैसे दे दूँ?''

बाबूजी, ''जो इच्छा हो दे दीजिए। वैसे डॉक्टर के घर से यहाँ तक का किराया तो अतिरिक्त हो गया न।''

उसने पूछा, ''बाबूजी यहाँ से कहाँ जाएँगे?'' मैंने होटल का नाम बता दिया और कहा, ''भाई, तुम जाओ, यहाँ देर लग सकती है।''

वह कुछ बोला नहीं। हम डॉक्टर के पास चले गए। घंटा भर बाद निकले तो देखा, वह वहीं खड़ा था। अब हमें महसूस होने लगा था कि यह ऑटोवाला कुछ और है। वह हमारे भीतर घर करता गया। होटल पर छोड़कर उसने पूछा, ''फिर कब आऊँ?''

''यानी''

''यानी आप शहर में घूमेंगे-फिरेंगे न? आपको जहाँ जाना होगा, ले चलूँगा। वैसे यहाँ कब तक हैं?''

''कल शताब्दी से लौटेंगे।''

''तो आपको घुमाने के लिए कब आ जाऊँ?''

''भई, आज तो थके हैं। आराम करेंगे, कल घूमेंगे।''

''ठीक है बाबूजी, यह रहा मेरा मोबाइल नंबर, मुझे फोन करके बुला लीजिएगा।''

''अरे, तुमने अपना नाम तो बताया ही नहीं।''

''मोहन।''

''मोहन। अच्छा नाम है।''

दूसरे दिन घूमने का कार्य शुरू हो गया। वह बहुत प्रेम से एक के बाद एक स्थान दिखाता गया। मुझे

'बाबूजी' और पत्नी को 'अम्माँ' नाम से संबोधित करता रहा। घूम-घूमाकर होटल पर लौटे तो चाय पीने के लिए उसे भी कमरे में बुला लिया। वह बहुत संकोच के साथ आया। चाय-पान के साथ हमारी पारिवारिक वार्ता शुरू हो गई। पत्नी ने पूछा, ''बेटे, तुम ग्वालियर के हो?''

''नहीं अम्माँ! मैं मूलतः आगरा का हूँ। यहाँ आना पड़ गया।''

हमें लगा कि वह यह कहते-कहते कुछ भर आया है। इसलिए चुप रहे, लेकिन वह स्वयं बोलने लगा, ''आगरा में अपना घर है। माँ-बाप तो बचपन में ही गुज़र गए, बड़े भाई ने मेरी परवरिश की। भाई वकील हैं। मैं भी बी.ए. पास हूँ। कोई नौकरी खोज रहा था कि...''

एक चुप्पी सी छा गई। हमें लगा कि इसके साथ कोई अवांछित घटना घटी है। उसे छेड़ा नहीं, किंतु उसने फिर कहना शुरू किया, ''मैं नौकरी की तलाश में इधर-उधर भटक रहा था। एक दिन भटककर लौट रहा था कि रास्ते में एक परिचित लड़की मिल गई, बदहवास सी, घिघियाती हुई बोली, ''मोहन, मुझे बचा लो।''

''क्यों, क्या हुआ?''

''मेरे माँ-बाप एक अधेड़ के हाथ मुझे बेच रहे हैं। मैं कुएँ में गिरकर जान दे दूँगी, किंतु उस खूसट अधेड़ के साथ नहीं जाऊँगी।''

''मैं बहुत असमंजस में पड़ गया। क्या करूँ? कर भी क्या सकता हूँ। मुझे लगा कि स्टेशन चलना चाहिए। वहाँ उसे ले गया और थानेदार से हकीकत बयान की। वे कुछ देर सोचते रहे कि क्या किया जा सकता है।''

थानेदार साहब बोले, ''इसकी एफ.आई.आर. लिखकर इसके माँ-बाप को हवालात में बंद कर देता, लेकिन फ़िलहाल चिंता इस लड़की की है कि आखिर इसके लिए क्या किया जाए?''

एक छोटी सी चुप्पी के बाद वे एकाएक बोले, ''तुम्हारी शादी हो गई है?'' मैंने न में सिर हिलाया। तो बोले, ''तुम इससे शादी क्यों नहीं कर लेते?''

मैं तो इस आकस्मिक प्रस्ताव से चकरा गया, किंतु कुछ पल बाद लगा कि इसमें बुराई क्या हैं। मैंने कहा, ''सर, इससे तो पूछ लीजिए।''

थानेदार ने उससे पूछा तो उसने स्वीकृति-सूचक सिर हिला दिया। ''लेकिन।''

''लेकिन क्या मोहन?''

''बाबूजी, लेकिन यह कि भाभी अपनी बहन से मेरी शादी कराना चाहती रहीं। बात तय हो चुकी थी।''

''फिर?''

''बाबूजी, मैंने सोचा, भाभीजी की बहन से तो कोई भी अच्छा आदमी शादी कर लेगा। वहाँ कोई संकट नहीं है, लेकिन इस लड़की की तो जिंदगी खतरे में है। लड़की सुंदर भी है, परिचित भी और सबसे अहम बात यह कि वह संकट मैं है। इससे विवाह करना प्रीतिकर भी होगा और मानवीय भी। लेकिन...''

''फिर लेकिन?''

''हाँ, अब समस्या यह कि विवाह एकदम तो न हो जाएगा। यदि लड़की घर गई तो फिर वही बेच दिए जाने का संकट। मैं साथ ले जाऊँ तो भैया-भाभी तो नाराज होंगे ही, इसके माँ-बाप मेरे ऊपर लड़की भगाने का केस कर देंगे। जब मैंने थानेदार के सामने यह समस्या रखी तो वे बोले, कुछ दिन के लिए इसे नारी-निकेतन में रखवा देता हूँ। लड़की से माँ-बाप के खिलाफ शिकायत लिखवाकर रख लेता हूँ।''

''पंद्रह दिन बाद उन्होंने मंदिर में उससे मेरी शादी करवा दी।''

मैंने कहा, ''मोहन, ऐसे थानेदार कहाँ होते हैं। मुझे तो इस घटना पर विश्वास ही नहीं हो रहा है। लगता है, कथा सुन रहा हूँ।''

''आप सही कह रहे हैं बाबूजी, लेकिन यह थानेदार कवि भी है। कवि-सम्मेलनों में कविताएँ पढ़ता है और इसकी कविताएँ मानवीय संवेदना से भरी होती हैं।''

''हाँ, तब ठीक है। भाई, हर क्षेत्र में कोई-न-कोई मसीहा दिखाई पड़ ही जाता है। हाँ, तब।''

''तब यह कि मेरे भाई-भाभी मुझसे खफा हो गए और हमें घर से निकाल दिया। एक तो मैंने उनकी साली

से शादी नहीं की, दूसरे जिस लड़की से की, वह किसी और जाति की है।''

''तो तुम लोग ग्वालियर आ गए।''

''हाँ, बाबूजी, आगरा में हमारा निबाह होना कठिन था। पराए शहर में भले ही कोई अपनापन न हो, किंतु यह परायापन उस अपनेपन से अच्छा है न, जो दिन-रात अप्रीतिकर व्यवहार बनकर तन-मन को उद्विग्न करता रहे।''

''हाँ, सही कह रहे हो।''

''तो यहाँ कोई नौकरी तो रखी नहीं थी। बस ऑटो का दामन थाम लिया और उसी के सहारे चल रहा हूँ।''

''वास्तव में तुम बहुत बड़े हो मोहन। बड़े-बड़े लोग तो नारी-हित में बड़े-बड़े लैक्चर देते हैं, लेख-कविताएँ लिखते रहते हैं, किंतु अपने व्यवहार में नहीं उतारते। लेकिन तुमने तो बहुत सहज भाव से एक लड़की को दुर्दशाग्रस्त होने से बचा लिया और अपने जीवन के साथ उसे सम्मानपूर्वक लगा लिया।''

''बाबूजी, इस कार्य से मुझे भी बहुत संतोष मिला। मैंने तो एक बार उसका उद्धार किया, किंतु वह तो प्रायः मुझे संकटों से उबारती रहती है।''

मोहन की यह कहानी हम पर छा गई और वह हमारे मन में कितना बड़ा हो गया।

गाड़ी का समय हो रहा था। मोहन हमें लेकर स्टेशन आ गया। उसे मैं पाँच सौ रुपए का नोट देने लगा। वह बोला, ''रहने दीजिए बाबूजी।''

''अरे यह तुम्हारा पारिश्रमिक है, कोई दान थोड़े ही दे रहा हूँ।''

''बाबूजी, मैंने माँ-बाप का प्यार नहीं पाया। कल से ही लग रहा है कि मुझे माँ-बाप मिल गए हैं। इस सुख के आगे पैसे का तो कुछ भी मोल नहीं है। पैसा तो और लोगों से कमाँ ही लेता हूँ।''

''बेटे, लेकिन मेरी भी तो सोचो। मैं बेटे का शोषण कैसे कर सकता हूँ?''

''लेकिन यह तो बहुत है। इतना लूँगा तो आपका शोषण हो जाएगा।'' यह कहकर वह पाँच सौ का नोट लेकर तीन सौ वापस करने लगा।

बोला, ''मुझे इतना पराया न कीजिए, बाबूजी। हाँ, जब भी ग्वालियर आइएगा, मुझे बुला लीजिएगा। मेरा फोन नंबर तो आपके पास है ही।''

''लेकिन मेरी एक शर्त है।''

''वह क्या बाबूजी?''

''ये पाँच सौ रुपए चुपचाप तुम्हें लेने ही पड़ेंगे।''

उसने तीन सौ रुपए अपनी जेब में रख लिये। जैसे कह रहा हो 'यह कैसी शर्त आपने रख दी बाबूजी।' कुछ क्षण बाद बोला, ''बाबूजी, आपका फोन नंबर तो मेरे फोन पर आ ही गया है। कभी-कभी फोन करता रहूँ क्या?''

''हाँ-हाँ भाई, शौक से। मुझे अच्छा लगेगा।''

''लेकिन आपका नाम तो मैंने पूछा ही नहीं।''

''मैं हूँ सत्यकेतु और पत्नी हैं कामना।''

और जब हम स्टेशन के अंदर जाने लगे तब वह आँखें में न जाने कितना अपनापन लिये हमें निहारता रहा।

शब्दार्थ और टिप्पणी

यात्रा-भीरु यात्रा से डरनेवाला **अंट-शंट** मरजी में आए ऐसा, निरंकुश **आश्वस्ति** आश्वासन, तसल्ली **वांछित** इच्छा अनुसार **इन्तजार** प्रतीक्षा **वाट** राह **अतिरिक्त** उपरांत **छेड़ना** उकसाना **खूसट** अप्रिय **अधेड़** आधेड़ उम्रका प्रौढ **हवालात** जेल **अहम बात** मुख्य बात **प्रीतिकर** मनभावन **संवेदना** पीड़ा **मसीहा** देवदूत **उबारना** बचाना, से बाहर निकालना

मुहावरे

पाला पड़ना सम्बन्ध जुड़ना **चुप्पी-सी छा जाना** शांति छा जाना, **असमंजस में पड़ जाना** द्विधा में पड़ना, क्या करूँ क्या न करूँ यह समज में न आना, **निबाह होना** घर खर्च निकलाना **उद्विग्न करना** पीड़ा देना

स्वाध्याय

1. निम्नलिखित प्रश्नों के एक-एक वाक्य में उत्तर दीजिए :

(1) लेखक को ग्वालियर क्यों जाना पड़ा?

(2) लेखक के न कहने पर भी ऑटोवाला उनका इन्तजार क्यों करने लगा?

(3) लड़कीने मोहन से घिघियाते हुए क्या कहा?

(4) मोहन लडकी से विवाह करने क्यों तैयार हो गया?

(5) थानेदार की क्या विशेषता थी?

(6) मोहनने ज्यादा पैसै लेने से क्यों इन्कार किया?

2. निम्नलिखित प्रश्नों के दो-तीन वाक्यों में उत्तर दीजिए :

(1) लेखकने ऑटोवाले की बात को स्वीकृति क्यों दी?

(2) मोहन की पारिवारिक स्थिति क्या थी?

(3) लड़की किस बात के लिए तैयार नहीं थी? क्यों?

(4) लेखक मोहन को बहुत बड़ा क्यों बताते हैं?

3. विस्तार से उत्तर दीजिए :

(1) लेखक यात्रा से क्यों ड़रते थे?

(2) मोहन का चरित्र चित्रण कीजिए।

(3) लेखक के साथ मोहन ने अपनापन कैसा जताया?

4. निम्नलिखित विधान किसने किससे और क्यों कहा?

(1) ''इससे विवाह करना प्रीतिकर भी होगा और मानवीय भी।''

(2) भाई हर क्षेत्र में कोई न कोई मसीहा दिखाई पड़ ही जाता है।

(3) मुझे इतना पराया न कीजिए, बाबूजी?

5. सही शब्द चुनकर योग्य उत्तर दीजिए।

(1) ऑटोवाले ने लेखक को नई जगह पर पहुँचा दिया, क्योंकि...

(अ) लेखक को दूसरी जगह घूमने जाना था।

(ब) वहाँ डॉक्टर हाज़िर नहीं था।

(क) डॉक्टर ने क्लीनिक की जगह बदल दी थी।

(2) बात करते हुए मोहन रुक गया और चुप्पी सी छा गई, क्योंकि...

(अ) कोई अवांछित घटना घटी थी।

(ब) नौकरी की तलाश में उसे आगरा से भटकते हुए ग्वालियर आना पड़ा।

(क) उसे एक लड़की मिल गई।

(3) लेखक को मोहन की बात कहानी-कथा सुन रहे ही ऐसी लगी, क्योंकि...

(अ) लेखक सोचने लगे कि कोई थानेदार ऐसा सहृद व्यवहार कर सकता है?

(ब) लेखक को मोहन की बात पर विश्वास नहीं आ रहा था।

(क) मोहन कोई कहानी सुना रहा था।

(4) मोहनने ज्यादा पैसे लेने से इन्कार कर दिया, क्योंकि...

(अ) मोहन चाहता था कि उसे इतना पराया न समजा जाय।

(ब) वह परिश्रम से ज्यादा पैसे लेने के पक्ष में नहीं था।

(क) वह चाहता था कि लेखक दूबारा ग्वालियर आए तो उसके ही ऑटों का उपयोग करें।

6. निम्नलिखित मुहावरों का वाक्य में प्रयोग कीजिए :

(1) पाला पड़ना (2) असमंजस में पड़ना (3) दामन थाम लेना

7. निम्नलिखित शब्दों के विरोधी शब्द दीजिए :

वांछित, परिचित, समस्या, मसीहा, प्रीति, संतोष, शोषण

योग्यता-विस्तार

विद्यार्थी-प्रवृत्ति

- मैं ऑटोवाला होता तो.... विषय पर छात्र अपने विचार व्यक्त करे।

शिक्षक-प्रवृत्ति

- नारी सशक्तिकरण-छात्रों से एवं नारी सुरक्षा के विषय में साहित्य सामग्री का संग्रह करवाइए।
- किसी व्यक्ति का साक्षात्कार करने के लिए प्रश्नसूची तैयार करें।
- छात्रों के द्वारा किसी व्यक्ति का परिचय लिखवाइए।
- किसी घटना का रिपोर्ट तैयार करवाइए।

●